अनासक्त चेतना का जागरण : आचार्य श्री महाश्रमण

रतनगढ़ : 7 जनवरी 2011

राष्ट्र संत युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण ने गोलछा ज्ञान मंदिर में विशाल धर्म सम्मेलन को संबोधित करते हुए गीता के संदर्भ में अनासक्त चेतना का जागरण विषय पर व्याख्यान करते हुए कहा कि बंधन से मुक्त होने के लिए आसक्ति को छोड़ना होगा। आसक्ति की प्रवृति मनुष्य को बांध देती है, अज्ञानी आदमी प्रवृति के साथ चिपक जाता है। बंधन मुक्ति का उपाय आसक्ति को समाप्त करना है। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत गीता भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसमें जीवन जीने का तरीका बताया गया है। आत्मा एक अविनाशी तत्व है, जैसे आदमी पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र पहनता है वैसे ही आत्मा देह परिवर्तन करती है फिर मृत्यु के पश्चात शोक कैसा ! आत्मा सनातन तत्व है।

आचार्य महाश्रमण ने विषय पदार्थों पर चर्चा करते हुए कहा कि विषय पदार्थों का बार–बार ध्यान लगाने, चिंतन करने से कामना बढ़ती है, पूर्ति होने से और बढ़ती है और पूर्ति नहीं होने पर क्रोध आता है। यही बंधन है। आदमी का मन ही बंधन व मुक्ति का कारण है। भाव विशुद्धि की आराधना करें। अनासक्ति की चेतना जीवन की अच्छी शैली है, इससे परम शक्ति प्राप्त होती है। कार्यक्रम शुरु होने से पूर्व मुनि दिनेश ने कहा कि हर व्यक्ति के मन में अनन्त ज्ञान की सत्ता है। व्यक्ति के मन में यह चिंतन होना जरुरी है, ज्ञान भीतर से मिलता है, साधना के द्वारा सिद्धी को भी प्राप्त किया जा सकता है। गत गुरुवार की रात्रि मुनि हिमांशु कुमार ने कहा कि व्यक्ति का जीवन अच्छा व शांतिमय कैसे हो इस पर चिंतन करना चाहिए। व्यक्ति के जीवन में धर्म–आध्यात्म का समावेश हो तो व्यक्ति अपने जीवन समस्या को सुलझा सकता है।

वर्धमान महोत्सव के अवसर पर बड़ी संख्या में संत, साध्वी, मुमुक्षु, भाई–बहन, जैन धर्मावलंबी प्रवासी बन्धु बाहर से आ रहे है। गोलछा ज्ञान मंदिर के प्रांगण में कड़कड़ाती ठंड के बाद भी आध्यात्म की गर्मी हर आगंतुक को मिल रही है। आज पंजाब से आए सैंकड़ों श्रीवक–श्राविकाओं ने आचार्य श्री के दर्शन कर चातुर्मास पंजाब में करने की अर्ज की। उपसिका तारा दूगड़ ने वन्दन कर आचार्य श्री का अभिवन्दन किया। मंच संचालन भंवरलाल सिंघी ने किया।

आचार्य महाश्रमण का ऐतिहासिक मिलन

रतनगढ़ : 7 जनवरी 2011

तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाश्रमण के दीक्षा प्रदाता मुनि श्री सुमेरमल जी, पन्नालाल सिपाणी के निवास स्थल से विहार कर पंजाब से आए सैकड़ों श्रावक–श्राविकाओं के साथ गोलछा ज्ञान मंदिर पहुंचे तो विशाल प्रवचन पांडाल ओम् अर्हम् की गूंज से आध्यात्मिक हो गया। यह ऐतिहासिक प्रथम मौका था जब किसी तेरापंथ के आचार्य ने आचार्य पद प्राप्ति के पश्चात अपने दीक्षा प्रदाता का दर्शन किया है। इस अवसर पर उन्होंने एक–दूसरे की वन्दना की और ऋजुता के साथ आचार्य महाश्रमण ने अपने दीक्षा प्रदाता के पद प्राक्षालन का प्रस्ताव किया। पंजाब से श्रावकों की और से मुनि श्री सुमेरमल जी ने फरमाया कि पंजाब तेरापंथ के लिए बहुत उपजाऊ क्षेत्र है और वहां के नन्हे पौधे रुपी श्रावकों की सार संभाल आचार्य श्री को बहुत ही अच्छे रूप से करनी चाहिए। इस अवसर पर आए मुनि विमल कुमार, मुनि कमल कुमार, मुनि उदित कुमार जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी एवं मुनि विजय कुमार जी आदि संतों ने गीत के द्वारा श्रद्धा समर्पित की। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी ने इस ऐतिहासिक मिलन को आल्हाद्धकारी बताया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com

आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, रतनगढ़